

**भौतिक भूगोल** पुं. (तत्.) भूगोल की वह शाखा जिसमें पृथ्वी के विविध भागों की प्राकृतिक रचना आदि का विवेचन होना है।

**भौतिक भूविज्ञान** पुं. (तत्.) भूविज्ञान की वह शाखा जो पृथ्वी को संघटित करने वाले पदार्थों की प्रकृति, उनके गुणों, वितरण तथा उन्हें बनाने और बदलने वाले प्रक्रमों का अध्ययन करती है।

**भौतिकवाद** पुं. (तत्.) दर्श. एकमात्र प्रकृति या जड़तत्त्व को ही मान्य तथा आत्मा और परमात्मा को अमान्य करने वाला दार्शनिक मत, जड़वाद।

**भौतिकवादी** वि. (तत्.) दर्श. भौतिकवाद-संबंधी, भौतिकवाद का जैसे- भौतिकवादी विचार।

**भौतिक विद्या** स्त्री. (तत्.) 1. भौतिकी 2. भूत-प्रेत से संबंध स्थापित कर, उन्हें बुलाने आदि की विद्या।

**भौतिक सृष्टि** स्त्री. (तत्.) आकाश आदि पाँच भूतों से बना जगत्।

**भौतिकी** स्त्री. (तत्.) विज्ञान की वह शाखा जिसमें पदार्थों के सामान्य गुणों तथा उन पर प्रभाव डालने वाले कारकों (ताप, प्रकाश ध्वनि, ऊर्जा इत्यादि) का अध्ययन होता है, भौतिक विज्ञान।

**भौन** पुं. (तद्.) भवन, घर जैसे- सूनो भौन।

**भौना** अ.क्रि. (देश.) 1. चक्कर लगाना, घूमना 2. बेकार ही इधर-उधर धूमना।

**भौभंगी** वि. (तद्.) आवागमन आदि संसार से उत्पन्न तापों का नाशक, भव-नाशक।

**भौम** वि. (तत्.) 1. भूमि-संबंधी, भूमि का 2. पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला, भूमिज पुं. 1. पृथ्वी का पुत्र 2. मंगल ग्रह।

**भौमजल** पुं. (तत्.) भूमि से निकलने वाला जल, भूमिगत जल।

**भौमवार/भौमवासर** पुं. (तत्.+तद्.) मंगलवार।

**भौमिक** पुं. (तत्.) भूमि का स्वामी।

**भौमिकी** स्त्री. (तत्.) 1. भूगोल 2. भूविज्ञान।

**भौमी** स्त्री. (तत्.) 1. पृथ्वी की पुत्री 2. सीता, जानकी।

**भौर** पुं. (तद्.) 1. (नदी आदि का) भँवर, जल-आवर्त 2. भ्रमर, भौरा।

**भौरी** स्त्री. (देश.) 1. तपी राख 2. आटे की गोल बाटी जिसे कंडे की धीमी आँच में सेंका जाता है।

**भौसागर** पुं. (तद्.) संसार रूपी सागर, भव-सागर।

**भ्रंश** पुं. (तत्.) 1. पतन 2. हास 3. नाश, ध्वंस 4. लोप 5. भटकाव, भटकन।

**भ्रंश** वि. (तत्.) भ्रष्ट।

**भ्रंशन** पुं. (तत्.) 1. गिरने की क्रिया/भाव, पतन, गिरावट 2. वंचित होना, वंचन 3. दोष, गलती **भ्रूवि.** वलन प्रक्रिया में अधिक खिंचाव होने से कठोर शैलों के टूटने की क्रिया।

**भ्रंशी** वि. (तत्.) 1. गिरने वाला 2. जीर्ण होने वाला 3. नष्ट करने वाला 4. भ्रष्ट होने वाला।

**भ्रंशोत्थ** वि. (देश.) भ्रंशन से उठा हुआ या बना हुआ, जो भ्रंशन और उत्थान से बना हो।

**भ्रंशोत्थ पर्वत** पुं. (तत्.) भ्रूवि. वह पर्वत जिसकी मूलभूत संरचना किसी भ्रंशन से हुई हो, भ्रंश घाटियों के बीच में पृथ्वी के उत्थान से बना पर्वत, जिसके ढाल खड़े होते हैं और शिखर लगभग समतल होता है।

**भ्रंस** पुं. (तद्.) भ्रंश।

**भ्रकुटि** स्त्री. (तद्.) भ्रू, भौंह।

**भ्रंगी** पुं. (तत्.) गुजारने वाला एक प्रकार का कीट, **भ्रंग** स्त्री. नारी/मादा भ्रंग कीट।

**भ्रम** पुं. (तत्.) 1. चारों ओर घूमना 2. भटकाव 3. किसी वस्तु को अन्य वस्तु समझ लेना, मिथ्या ज्ञान, भ्रांति।

**भ्रमकारी** वि. (तत्.) जो भ्रम उत्पन्न करे, भ्रामक, भ्रमोत्पादक।